उजालों के आसपास—ग़ज़ल में नई ज़मीन की तलाश

पुस्तक समीक्षा - डॉ. ज़ियाउर रहमान जाफ़री

अभिषेक कुमार सिंह ने थोड़े ही समय में हिंदी ग़ज़ल में अपनी ख़ास शनाख़्त बना ली है.उसकी अपनी वजह भी है.उन्होंने ग़ज़ल में नये प्रतीक और नये रदीफ़ तलाशे हैं.ग़ज़ल लिखते हुए न उन्होंने किसी दूसरे का ख्याल लिया है,और न ग़ज़ल के किसी पारंपरिक काफ़िया को अपनाया है.ऐसा भी नहीं है कि उनके पास विशाल तजुर्बा है,लेकिन अपने ख्यालों को नयेपन के साथ ग़ज़लों में समेटने की चमत्कारिक शैली है.यही कारण है कि हिंदी ग़ज़ल के युवा रचनाकारों में वह सरे फ़हरिस्त हैं.वीथियों के बीच के बाद उनका नया ग़ज़ल संग्रह उजालों के आसपास आया है. ज़ाहिर है शायर दुनिया के अंधेरों से निकल कर उजालों के पास जाना चाहता है,और इस कोशिश में वह उसके आसपास मंडराकर रह जाता है,क्योंकि बारिश, बादल,हवा, ज़मीन की तरह उजालों को भी देश के रईसों ने ख़रीद लिया है.उनकी ग़ज़लें हमें आश्वस्त करती हैं कि जहां कहीं भी बेईमानी,नाइंसाफी, वर्गभेद और तीरगी है, उस माहौल के ख़िलाफ़ साथ देने के लिए एक शायर खड़ा है.वह जब ग़ज़लें लिखते हैं, पूरी कायनात उनके साथ खड़ी हो जाती है.कहते हैं किट्स जब तपेदिक से मर रहे थे,तो उनकी दोस्त फ़ैनी पार्टी में अन्य पुरुषों के साथ दिल बहला रही थी.अभिषेक कुमार सिंह की ग़ज़लों की यह ख़ूबसूरती है कि उनकी उदासी पूरे जहां की उदासी बन जाती है.भाषा के दृष्टिकोण से भी उन्होंने जो मुहावरे गढे हैं,वह हिंदी ग़ज़ल में सिर्फ उन्हीं की थाती है.असल में वह ग़ज़ल लिखते हुए पूरी एहतियात बरतते हैं,और इस कोशिश में उनके एक-एक शेर किसी नगीने की तरह निखर जाते हैं.अतुल अजनबी का एक शेर है कि -वो एहतियात बरतने का इतना आदी था

ज़रा सा काम उसे बार-बार करना पड़ा

उनके कई शेर ऐसे हैं.जो पौराणिक प्रतीकों को आधुनिक संदर्भ में उठाते हैं.एक ग़ज़ल के कुछ शेर देखें -

जलवायु में परिवर्तन की बात करेंगे
शातिर बादल अपने मन की बात करेंगे

जब जब सीता को अपमानित करना होगा
दुनिया वाले इक धोबिन की बात करेंगे

शबरी के बेरों को जूठा करने वाले
कैसे राम के निश्छल मन की बात करेंगे ये ऐसे शेर हैं जो हमारी दोहरी नीति को बेपर्दा करते हैं. असल में आज का इंसान कई परतों में जी रहा है, इसलिए उसकी पहचान की कोशिश में आदमी बार-बार फरेब खा रहा है. ऐसे ही कुछ और शेर देखें -

बसाना था जहां कुछ बेघरों को
वहां भेजा गया बुलडोज़रों को

नफ़रतों का यह बवंडर कौन रोकेगा यहां
अनगिनत नाथू खड़े हैं गांधियों के वेश में
.....
ऐसा न हो के सारा अडानी ख़रीद ले
तू अपनी प्यास के लिए पानी ख़रीद ले
...
क्या कहें किस हाल में मारा गया
न्याय अमृत काल में मारा गया

यह ऐसे शेर हैं जिसे वही शायर लिख पाता है,जो किसी खौफ़ से भयभीत नहीं होता,और न जिसे बादशाहों के तलवे चाटने की ज़रूरत पड़ती है.पूरी हिंदी ग़ज़ल में दुष्यंत और अदम को छोड़ दें तो जहां बच- बचाकर लिखने का रिवाज है. अभिषेक कुमार सिंह हुकूमत की नाइंसाफ़ी के ख़िलाफ़ खुलकर खड़े होते हैं,और कई बार तो वह बग़ावत पर आ जाते हैं. कुछ और शेर देखें -

नाचती है शाह का आदेश सुनकर
न्याय की देवी रखैली हो चुकी है
.....
डार्क फ़िल्मों के चरित्रों की तरह हो जाएंगे
लड़ते लड़ते लोग गुंडों की तरह हो जाएंगे
.....
हम मजूरों को ठिठुरना है सदा
हां कभी बीड़ी जला ली जाएगी

यह वह शेर है जिसमें पूस की रात का सारा कथानक निचोड़ कर रख दिया गया है.

उनकी शायरी में जहां कहीं थोड़ा बहुत प्रेम है, वहां भी उनकी मासूमियत झलकती है. न कोई चाहत न कोई फ़रेब न कोई नुमाइश बस शायर इतना ही कह पाता है कि -

दिल वालों की सोहबत ज़िंदा रखती है
मुझको मेरी आदत ज़िंदा रखती है

मैंने जीना छोड़ दिया तो यह जाना
मुझको तेरी चाहत ज़िंदा रखती है

पर शायर बहुत देर तक इस मोहब्बत की भी जाल में नहीं फसता, और अगले ही पल एक ऐसा शेर कह देता है, जिसमें कई हिंसक देशों की परतें खुल जाती हैं और उसका अंधकार भविष्य हमारे सामने आ जाता है-

हिंसक होकर इक दिन वे मर जाते हैं
जिन धर्मों को दहशत ज़िंदा रखती है

ऐसे ही ख़ूबसूरत अनूठे, और चौंकाने वाले शेर इस संग्रह में भरे पड़े हैं, जिसे पढ़ते हुए हम हैरतज़दा हो जाते हैं, और इस शायर के मुरीद हुए बिना नहीं रहते.

उजालों के आसपास
ग़ज़ल संग्रह
अभिषेक कुमार सिंह
वर्ष 2025, मूल्य 195, पृष्ठ 120
श्वेतवर्णा प्रकाशन नोयडा

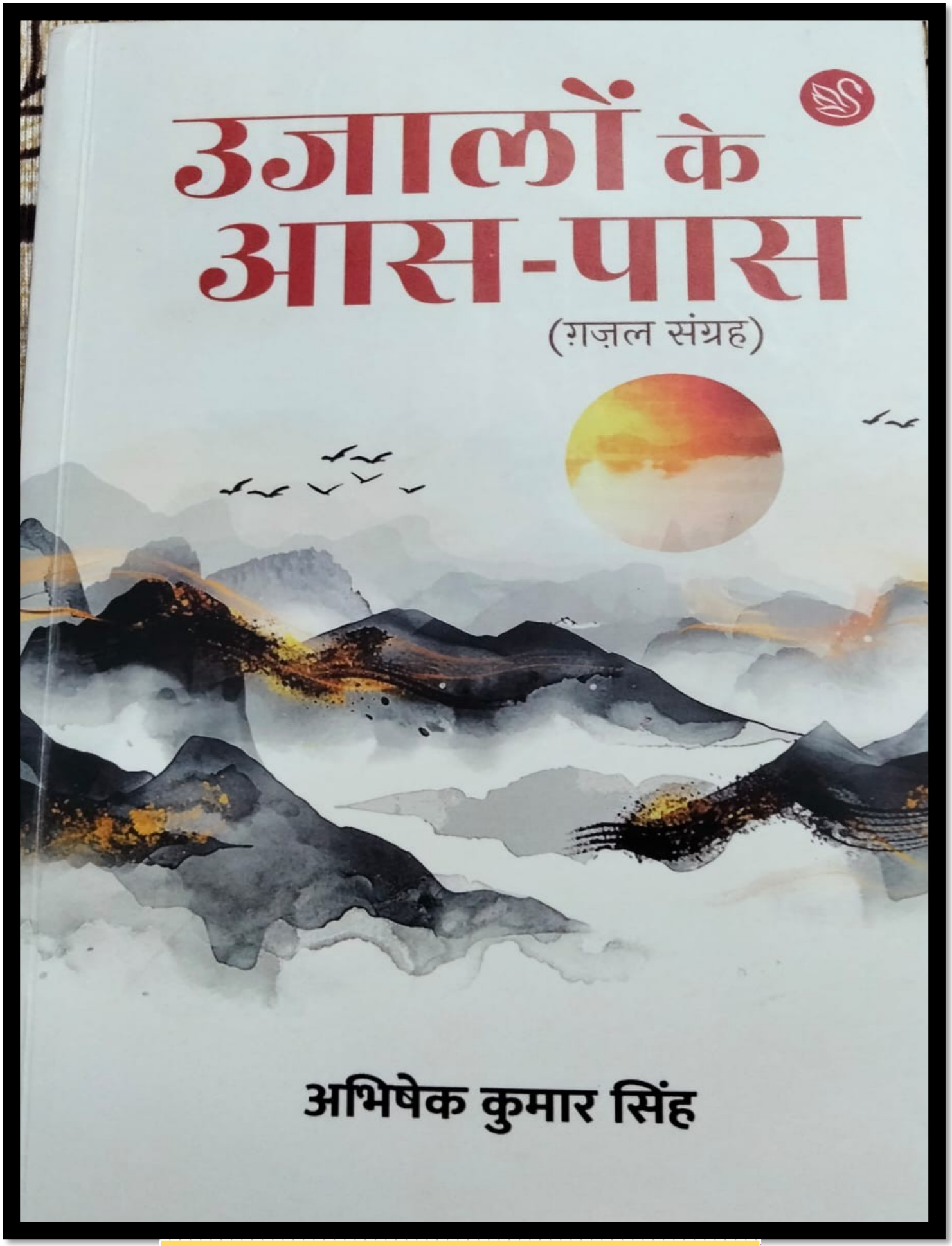

साहित्य रत्न वर्ष-3 अंक-8 दिसम्बर-2025 : ISSN:2583-8849